www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

जे-जे सृष्टीक्रमाला अनुकूल असेल ते-ते सत्य आहे
आणि सृष्टीक्रमाच्या विरुद्ध असणारे सर्व असत्य आहे.

सभा कार्यालय :- दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार, सदर, नागपुर (महाराष्ट्र)

www.thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ सभा की वार्षिक बैठक

"आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ सभा की वार्षिक बैठक एवं अंतरंग सभा" दि. १३/१२/२०१६

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के सभी आर्य समाजें के प्रतिनिधियों को अवगत किया जाता है कि, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश विदर्भ की वार्षिक साधारण सभा दिनांक १४/१/२०१७ को पं. सत्यवीरजी शास्त्री सभा प्रधान की अध्यक्षता में, आर्य समाज हंसापुरी सेंट्रल एव्हेन्यु रोड, गितांजली टॉकीज के सामने प्रातः सत्संगोपरान्त ११ बजे संपन्न होगी।

तथैव - अंतरंग सभा की बैठक सभा प्रधान पं. सत्यवीरजी शास्त्री की अध्यक्षता में दिनांक १४/१/२०१७ को सायंकाल आठ बजे आर्य समाज हंसापुरी में संपन्न होगी। विषय सूची पोस्ट से भेजी जा रही है।

सभी स्वीकृत, अंतरंग सदस्य, पदाधिकारी एवं आर्य समाज प्रतिनिधि सादर आमंत्रित है।

भवदीय

प्रधान	उपप्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
सत्यवीर शास्त्री	**अनिल शर्मा**	**अशोक यादव**	**यशपाल जातवानी**

विशेष :-

१) प्रतिनिध वार्षिक दशांश सभा कार्यकाल में जमा कर रसीद प्राप्त करेंगे।

२) सभी प्रतिनिधियों की निवास एवं भोजन की व्यवस्था आर्य समाज हंसापुरी में की गई है।

आवश्यक सुचना

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ की समस्त समबध्द आर्य समाजो से निवेदन है कि सभा के नियमानुसार "दशांश" राशी व "वार्षिक वृत्तांत" भरकर भेजे, जिन्होंने पिछले वर्षों के दशांश व "वार्षिक वृत्तांत" अन्य गुट को दिया हो वे भी प्राप्त राशी कि फोटो कापी पर प्रधान मंत्री के हस्ताक्षर कर भेज दे, जिससे मा. धर्मादाय आयुक्त महाराष्ट्र शासन, नागपुर में उनके ऑडिट के सम्मिलित कर, नियमानुसार कार्य कर सकें।

अशोक यादव

मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ

www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य सेवक

आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मुखपत्र

वर्ष - ११६ अंक १४
सृष्टि संवत १९६०८५२१७
दयानन्दाब्द - १९२
संवत - २०७३
सन् २०१६ नवम्बर-दिसम्बर

प्रधान
पं. सत्यवीर शास्त्री, अमरावती
मो.नं. ०९४२२१५८३६

मंत्री एवं प्रबंधक सम्पादक
अशोक यादव
मो. ०९३७२१२११६३

सम्पादक एवं उपप्रधान
जयसिंह गायकवाड, जबलपुर
मो. ०९४२४६८५०९१
e-mail : jasysinghgaehwad@gmail.com
निवास - ५८०, गुप्तेश्वर वार्ड,
कृपाल चौक, मदन महल, जबलपुर

सह सम्पादक
प्रा. अनिल शर्मा, नागपुर
मो. ९३७३१२११६४
मनोज शमा
मो. ९५६१०७९८९४

कार्यालय पत्ता :
दयानन्द भवन, मंगलवारी बाजार,
सदर, नागपुर-४४०००१ महाराष्ट्र
दूरभाष क्र. ०७१२-२५९५५५६

अनुक्रमणिका

क्र. लेख	लेखक	पृष्ठ क्र.
१. अश्वरोही बनो	वैदिक विनय से	१
२. आर्य संस्कृति	आचार्य प्रभामित्र	२-३
३. वेदामृतम्		३
४. मन और स्वभाव दयानन्द गोयलीय	स्वानंद गोयलीय	४-५
५. वैदिक धर्म व सनातन धर्म कि मुल मान्यता	पं. उम्मेदसिंह विशारद	६-८
६. चल - तू		८
७. सच्चे शिव की प्राप्ति	विद्यासागर शास्त्री	९-१२
८. ५०० करोड सेना फंड में जमा करो	आर्य समाज हंसापुरी	१३-१४
९. पुरस्कार हेतु	आर्य समाज सान्ताक्रूज	१५-१६
१०. आत्म विनय	विद्यासागरजी शास्त्री	१६
११. विक्रयार्थ पुस्तके	समा प्रधान	१६

टीप :- प्रकाशित कृतियों में व्यक्ति विचार लेखकों के हैं इनसे आर्य सेवक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

www.thearyasamaj.org

आर्य संस्कृति

❑ आचार्य प्रभामित्र

संसार की सर्वोत्तम महान संस्कृति आर्य संस्कृति ही है, क्योंकि वेदों में परमात्मा ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' कहकर इसका उद्घोष किया है। मानवमात्र को श्रेष्ठ (आर्य) बनाओ, जिसे हम आर्य संस्कृति कहते हैं। 'आर्य' शब्द अपने आप सुसंस्कृत शब्द है। ईश्वर का नाम अर्य है। अर्य का जो पुत्र है, उसे आर्य (श्रेष्ठ) कहते हैं। अब हम लोगों को विचार करना चाहिए कि ईश्वर के पुत्र कौन हो सकते हैं। जिसका गुण-कर्म व स्वभाव ईश्वर के अनुरूप आंशिक रूप से भी मिलता है उसे ही आर्य या ईश्वर का पुत्र कहा जा सकता है। परमात्मा में न्याय, दया, सर्वकल्याण की भावना सन्निहित हैं। हम लोगों में भी उक्त भावना होनी चाहिए। केवल शाब्दिक रूप में नहीं अपितु आर्यत्व प्राप्ति के लिए व्यवहारिक रूप होना अनिवार्य होता है।

आर्यों की सम्यक् कृति ही आर्य संस्कृति कहलाती है। यथा सर्वश्रेष्ठ मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम व योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा प्रदर्शित मार्ग आर्य मार्ग है। उत्तम कृति ही आर्य संस्कृति की पहचान है। महर्षि दयादन्त जी के शब्दों में **"सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए"** आर्य संस्कृति कही जाती है। अल्पशब्दों में कहें तो शास्त्र व शस्त्र का समन्वय ही आर्य संस्कृति है। विस्तृत रूप में वेदानुयायी, सभ्य, मननशील, कुटिल भावनाओं से अलग मर्यादित-जीवन, सभी प्रकार की मलीन वासनाओं से रहित, पारदर्शी जीवनशैली वाले लोगों को की आर्य या आर्य संस्कृति के पोषक कहते हैं। सर्वकल्याण चाहने वालों को ही मित्र कहा ज़ा सकता है। इस दृष्टि से प्राणी मात्र का कल्याण चाहने वाले ईश्वर को सभी प्राणियों का परममित्र समझा जाता है। किसी न किसी रूप में लोग ईश्वर को मानते ही हैं। उसकी सत्ता को स्वीकार करने के लिए हमें बाध्य होना पड़ता है। क्योंकि उसकी अद्भुत सृष्टि को देखकर अज्ञानी व्यक्ति भी सोचने के लिए बाध्य होता है। बिना व्यवस्थापक के इतनी सुन्दर व्यवस्था सम्भव नहीं हो सकती है। यह अस्तिकता का स्वरूप है। **पूर्व आस्तिक व्यक्ति ही आर्य नाम से जाना जाता है। आर्य मनुष्य परमात्मा को केन्द्र मानकर अपना व्यवहार व पूरी दिनचर्या सम्पादित किया करते हैं। ऐसे ही पूर्ण ईश्वर भक्त व्यक्तियों के समूह को 'आर्य समाज' कहते हैं।**

मनुष्यों के समूह ही समाज है। अन्यथा समज होता है जो पशुओं के समूह को कहा जाता है। महर्षि ने आर्य समाज के नियम में इस बात का उल्लेख किया है कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझली चाहिए। इस सिद्धान्त पर चलने वालें मनुष्यों को ही आर्य कहा जा सकता है। वेदन में ईश्वर ने कहा **'मित्रस्य चक्षुषा प्रतीक्षे'** अर्थात् समस्त प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें। इस वाक्य को समझने का प्रयास किया जाये। शत्रुओं के प्रति भी मित्र की भावना रखनी चाहिए। कारण, शत्रु वेद विरुद्ध आचरण से अन्यों की हानि करता है। तो उसे अधर्ममार्ग से हटाने के लिए सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार का बर्ताव करना ही शत्रुओं के प्रति मैत्रीपूर्ण व्यवहार होता है। क्योंकि इसी में उसका कल्याण सन्निहित है। यथा राम, कृष्ण व दयानन्द का शत्रुओं के प्रति मैत्री व्यवहार अनुकरणीय हैं।

यदि हम ईश्वरीय व्यवस्था को ध्यान में रखें, तो आसानी से आर्य सभ्यता या संस्कृति को समझ सकते हैं। जैसे ईश्वर पापियों का भी कल्याण करता है। समस्त प्राणी अपने कर्मानुसार व ईश्वरीय न्याय व्यवस्था

www.thearyasamaj.org

के अनुरूप कर्मफल को प्राप्त हो रहे हैं। इसी में प्राणी मात्र का कल्याण सन्निहित है। सृष्टि की रचना से ही समस्त आत्माओं का कल्याण माना जाता है। इसी व्यवस्था को ध्यान में रखकर महर्षि ने श्रेष्ठों के संगठन आर्य समाज की स्थापना की, ताकि लोग इससे जुड़कर अपना व अन्यों का कल्याण (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्ति) कर सकें। ईश्वर भक्त मानव ही समाज, राष्ट्र व परिवार के अत्यधिक रूप में सहयोगी बन सकते हैं। अन्यथा काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के कारण या लोकैषणा, वित्तैषणा व पुत्रैषणाओं के आधार पर अन्योपकार के स्थान पर हानि कर देते हैं। एक वाक्य में कहें तो यही कहा जाएगा कि पूर्ण ईश्वरभक्त मानव ही लोकोपकारक, समाज व राष्ट्र उद्धारक एवं सच्चे अर्थों में आर्य होते हैं। कठोर शब्दों में कहें तो जो पूर्ण ईश्वर भक्त, उपासक व योगी नहीं हैं, वे महर्षि दयादन्द के विचारों को नहीं समझ पायें हैं। ऐसे में वे मानवता की उन्नति में साधक नहीं अपितु बाधक ही होते हैं। **जो व्यक्ति किसी आर्य संगठन या संस्था में हैं या नहीं हैं किन्तु ईश्वरोपासना के साथ लोककल्याण में संलग्न हैं, वे महर्षि दयानन्द के शिष्य वा ईश्वर पुत्र आर्य हो सकते हैं।** यह शाश्वत सत्य है।

☆☆☆

वेदामृतम्

किं न इन्द्र जिघांससि, भ्रातरी मरुतस्तव।
तेभिः कल्पस्व साधुया, मा नः समरणे वधीः॥

हे इन्द्र! हे परमात्मन्! तुम ऐश्वर्यशाली हो, वीर हो, ब्रह्माण्ड के राजा हो। इसमें सन्देह नहीं कि तुम बहुत बड़े हो, महानों के महान् हो, किन्तु तुम हमारे ऊपर प्रहार पर प्रहार क्यों किये जा रहे हो? हम एक प्रहार से संभल कर उठ भी नहीं पाते कि तुम दूसरा प्रहार कर देते हो। हमारी पीठ पर कोड़े क्यों बरसाते जा रहे हो? देखो, तुम्हारे दण्ड प्रहारों से हमारा शरीर क्षत विक्षत हो गया है, हमारी इन्द्रियाँ बर्बर हो गई हैं, हमारा आत्मा घावों से बेचैन हो तड़प रहा है। कभी तुम अपने जवर, अतिसार, कुष्ठ, विशूषिका, राजयक्ष्मा आदि शस्त्रों से हम पर आक्रमण करते हो, कभी हमें दुभक्ष, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि से संत्रस्त करते हो, कभी हमें भीषण दुर्घटनाओं का विचार बनाते हो, कभी हमारे स्नेही जनों को हमसे छीनकर हम पर वज्रपाद करते हो, कभी हमें काम, क्रोध आदि अतरिक शत्राओं की मार से व्याकुल करते हो। हम नन्हे से जीव तुम्हारी लाई हुई इन विपदाओं को भला कैसे सह सकेंगे?

हे भगवन्! हम पर दया करो। हम तुम्हारे भाई हैं, तुम्हारे सबन्धु हैं, तुम्हारे सखा हैं। तुम और हम एक ही जगद् वृक्ष पर बैठे हुए हैं अन्तर इतना ही है कि हम इन वृक्ष के फलों को भोग रहे हैं, और तुम भोग से स्वतन्त्र होकर साक्षी मात्र बने हुए हो तुम सत्, चित्, अनादि और अनन्त हो, तो हम भी सत्, अनादि और अनन्त हैं। तुम आनन्दस्वरूप हो, हम आनन्दमय बनने की अभिलाषा रखते हैं। भाई होने के नाते हम तुम्हारी सहायता के पात्र है। तुम हमारे साथ साधुता का सहानुभूति का, सहृदयता का व्यवहार करो। संसार के इस विकट संग्राम में तुम हमारा वध करने पर उतारू क्यों हो रहे हो? यह सत्य है कि जो हम भोगते हैं, वह मारे अपने कर्मों का ही फल है, पर तुम्हारी दया से क्या संभव नहीं है! तुम चाहो तो हमारेजीवन की दिशा ही बदल सकते हो, हमें निर्बुद्धि बना सकते हो, असत्कर्मा से सत्कर्मा बना सकते हो, असुर से देवताबना सकते हो। अतः कृपा करो, बड़े भ्राता होने के नाते छोटे भ्राताओं को अपनी शरण में ले लो, हमारा उद्धार कर दो।

www.thearyasamaj.org

मन और स्वभाव

❑ दयानन्द्र गोयलीय

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइये, मन ही के परतीत।।

उक्त दोहे के कवि ने क्या अच्छा कहा है। वास्तव में मनुष्य का मन ही सब कुछ है। जैसा मन होता है वैसा ही स्वभाव होता है। जैसा मनुष्य मन में विचार करता है, जैसी भावनायें उसके हृदय में उत्पन्न होती हैं, वैसा ही वह स्वयं हो जाता है। अमुक मनुष्य कैसा है, उसका चरित्र कैसा है, उसका स्वभाव मृदु है या कठोर है, वह सुखी है, या दुःखी है, इन सब बातों का पता उसके मन से और उसके विचारों से लग सकता है। मनुष्य चाहे तो अपने विचारें से स्वर्ग को नरक बना दे और चाहे तो नरक को स्वर्ग बना दे; दुःखों में रहता हुआ भी सुख का अनुभव करे और सुखों का भोग करता हुआ भी दुःख रहे। सुख दुःख मन की अवस्थायें हैं। ये किसी वस्तु के होने या न होने पर निर्भर नहीं है। सम्भव है कि एक राजा धन सम्पदा और ऐश्वर्य को भोगता हुआ भी रात दिन चिंतारूपी चिता में जलतारहता हो और एक भिखारी जिसको भरपेट भोजन भी नहीं मिलता, सन्तोषरूपी अमृत का पान करता रहता हो। यह सब मन का प्रभाव है। जैसा मनुष्य विचारता है, तद्रूप होता है। विचार शक्ति बड़ी प्रबल होती है। जैसे विचार होते हैं वैसे ही कार्य होते हैं। कार्य विचार के अनुकूल होते हैं।

जिस प्रकार बीज से अंकुर उत्पन्न होते हैं और फिर से बढ़कर पेड़ का रूप धारण करते हैं उसी प्रकार मनुष्य का प्रत्येक कार्य उसके अंतरंग विचारों से उत्पन्न होता है। विचार के बाद कार्य होता है। बहुत से कार्य ऐसे होते हैं कि जिनके करने का संकल्प नहीं किया जाता, वैसे ही वे हो जाते हैं, परन्तु वे भी विचारानुकूल ही होते हैं। उनके करने से पहले भी मन में कुछ न कुछ विचार उनके विषय में अवश्य उत्पन्न होते हैं। भावार्थ दुनिया में कोई ऐसा काम नहीं है जो विचारानुकूल न हो।

जिस प्रकार पेड़ में कलियाँ निकलती हैं और कलियों में से फूटकर फूल निकलते हैं, वैसे ही विचार रूपी कलियों में से कार्यरूपी फूल निकलते हैं और सुख दुःख उनके फल होते हैं। जैसा मनुष्य बीज बोता है, उसके अनुसार फल लगता है। कहावत भी है "जैसा बोओगे, वैसा काटोगे"। खट्टे काम की गुठली के खट्टा आम पैदा होता है और मीठे आम की गुठली से मीठा आम होता है। जिस मनुष्य के विचार बुरे और गंदे होते हैं, वह सदा शोक और दुःख में ग्रसित होता है, परन्तु जिसके विचार विशुद्ध और पवित्र हैं, वह सदा हर्ष और आनन्द में निमग्न रहता है। मनुष्य को बढ़वारी प्रकृति के नियमानुसार होती रहती है। विचार के गुप्त साम्राज्य में कारण और कार्य का सम्बन्ध वैसा ही दृढ़ और स्थायी है जैसा कि बाह्य स्थूल जगत् में दृष्टिगोचर होता है। यदि कोई मनुष्य सभ्य और सुशील है सदाचारी और धर्मात्मा है तो यह न समझना चाहिये कि वह दैवयोग से ऐसा है, अथवा किसी की दया वा कृपा से ऐसा है, किन्तु इसका कारण यह है कि वह अपने मन में निरन्तर सद्विचारों को स्थान देने में शुभ भावनाओं के भाने में तत्पर रहा है और उन्हीं का यह परिणाम है। इसयके विपरीत जो मनुष्य निरत्तर तुच्छ और घृणित विचारों को अपने में स्थान देता रहता है, वह अन्त में नीच और पशु तुल्य बन जाता है।

मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है। वह चाहे तो अपने को बना सकता है और चाहे तो बिगाड़ सकता है। वह चाहे तो स्वयं अपने कर्त्तव्यों से १६

www.thearyasamaj.org

वें स्वर्ग में पहुँच सकता है और चाहे तो हीनचारों से ७ वें नरक कुण्ड में गिर सकता है। अपने विचार रूपी शस्त्रागार में वह ऐसे-ऐसे शस्त्र बनाता है जिनसे अपने को नष्ट कर डालता है; परन्तु वहीं पर वह ऐसे-ऐसे यंत्र भी बना सकता है जिनसे अपने रहने के लिए हर्ष और आनन्द के विशाल भवन बना लेता है। सद्विचारों के ग्रहण करने और उनके अनुकूल प्रवृत्ति करने मनुष्य पूर्ण परमानन्द परमात्म पद को प्राप्त कर सकता है; परन्तु इसके विपरीत निंद्य कुत्सित विचारों से वही मनुष्य पशुओं से भी नीचे गिर जाता है। चरित्र की ये ही दोन अवस्थायें हैं। इनमें पहली सबसे ऊँची है और पिछली सबसे नीची। इन्हीं दोनों के बीच में अन्य अवस्थायें हैं और मनुष्य ही उनका कर्त्ता धर्त्ता और निर्माता है।

आत्मा के सम्बन्ध में अब तक जितने उत्तम, उपयोगी और महत्वपूर्ण सिद्धांत मालूम हुए हैं, उनमें सब से अधिक उपयोगी और आनन्दवर्द्धक सिद्धान्त यह है कि मनुष्य अपने मन का राजा अपने स्वभाव का कर्त्ता और अपनी स्थिति, अवस्था और प्रारब्ध का निर्माता है।

मनुष्य बल, प्रेम और बुद्धि का पुतला है और अपने विचारों का राजा है, इसीलिये उसके पास प्रत्येक स्थिति और अवस्था की कुंजी है और उसमें भिन्न-भिन्न रूप धारण करने वाली एक ऐसी शक्ति विद्यमान है कि जिसके कारण वह जो चाहे बन सकता है जिस अवस्था में अपने को बदल सकता है।

मनुष्य प्रत्येक दशा में अपने ऊपर अधिकार रखता है, यहाँ पक कि अत्यन्त निर्बल और पतित अवस्था में भी पूर्ण रूप से वह अपना स्वामी और अधिकारी है। हाँ, यह अवश्य है कि इस पतित अवस्था में वह एक मूर्ख स्वामी है जो अपने कुटुम्ब का बुरी तरह से शासन करता है; परन्तु वही मनुष्य जब अपनी अवस्था पर विचार करने लगता है और अपने अस्तित्व के सिद्धान्त की सच्चे मन से जो करने लगता है, तो बुद्धिमान स्वामी बन जाता है जो बुद्धिमानी से अपनी शक्तियों का उपयोग करता है और ऐसे विचार स्थिर करता है कि उनका परिणाम सदैव उत्तम और लाभदायक होता है। ऐसा मनुष्य ही विवेकी स्वामी है। इस अवस्था को मनुष्य तभी प्राप्त कर सकता है कि जब वह अपने भीतर मनोबल के सिद्धांतों का अनुशीलता करे और इसके लिये निरंतर श्रम, उद्योग और विचार-अनुभव की आवश्यकता है।

जिस प्रकार बहुत सी खानों के खोदने और खोजी करने के बाद सोने और हीरों का प्राप्ति होती है, उसी प्रकार मनुष्य अपने अस्तित्व के सिद्धान्त को उसी समय मालूम कर सकता है जबकि वह अपनी आत्मा की खानि को बहुत गहरा खोदे, अर्थात् बहुत कुछ विचार और अनुशीलता करें। यदि मनुष्य अपने विचारों को अपने वश में रक्खे, उनमें आवश्यकतानुकूल परिवर्तन करता रहे और इस बात का पता लगाये कि उनसे स्वयं उस पर, दूसरों पर तथा उसके जीवन और जीवन की घटनाओं पर क्या-क्या असर होते हैं, तथा अत्यंत शांति और धैर्य के साथ खोज करके कारण और कार्य के सम्बन्ध को मालूम करे और अपनी प्रतिदिन की साधारण से साधारण घटनाअें के अनुभव से भी उस आत्म-ज्ञान की प्राप्ति में लाभ उठावे जिसका नाम बल, विवेक और बुद्धि है, तो उस समय यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध हो सकती है कि स्वयं मनुष्य ही अपने चरित्र का कर्त्ता, अपने जीवन का विधाता और अपने भाग्य का निर्माता है। इसीलिये यह सिद्धांत बिल्कुल सच्चा है -

'जिन खोजा तिन पाइयाँ'

जो खोजेगा सो पावेगा, जो खटखटायेगा उसके लिये द्वार खुलेगा, कारण कि निरंतर के उद्योग, संतोष और अभ्यास से ही मनुष्य सरस्वती-मंदिर में प्रवेश पा सकता है।

www.thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा धर्म का मूल स्वरुप वैदिक धर्म व प्रचलित सनातन धर्म की मूल मान्यता (समीक्षा)

❑ पं. उम्मेद सिंह दिशारद

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयादन्त सरस्वती जी ही एक मात्र ऐसे विचारक महाभारत काल के बाद हुए हैं, उन्होंने धर्म का सत्य स्वरुप संसार के सामने प्रस्तुत किया उन्होंने वैदिक धर्म के अनुसार सिद्ध किया किया जिस धर्म मत में निम्न पांच मान्यताऐं पूर्ण रूप से समावेश हैं वहीं ईश्वरीय धर्म मानव कल्याण हेतु सत्य धर्म है, और जिसमें एक गुण का भी अभाव है वह पूरक धर्म नहीं कहा जा सकता है।

मूल पांच मान्यताऐं निम्न है

१) अहिंसा, २) न्याय, ३) दया, ४) सत्य, ५) ईश्वर भक्ति

से सब धर्म के पर्याय है यदि इनमें से एक गुण भी निकाल दिया जाये तो वह धर्म नहीं रह जाता। यह धर्म का वास्तविक स्वरुप हैं। जिन धर्म सम्प्रदायों में उक्त एक गुण का भी अभाव है तो वह किसी सूरत में धर्म संगठन नहीं है। आजकल जितने भी सम्प्रदाय धरती पर प्रचलित है, उनमें एक वैदिक धर्म को छोड़ कर सभी में कोई न कोई कमी है। कारण कोई हिंसक तो कोई असत्य का आश्रित कोई ईश्वर भक्ति से वंचित है। धर्म का स्वरुप महान है उसका काई आर-पार नहीं। धर्म तो केवल वैदिक धर्म ही है जो मानव मात्र का बिना पक्षपात के कल्याण करता है। आइए विचार करते हैं।

१) अहिंसा :-

अनागोहत्या वै भीमा - (अर्थव) निरपराध की हत्या बड़ी भयंकर सजा देने वाली है क्योंकि संसार में सभी प्राणीयों की रचना ईश्वर ने की है, इसलिए सब प्राणी ईश्वर के पुत्र हुए। पशु की ईश्वर की रचना है। अतः पशु हत्या करके देवी देवताओं की पूजा से ईश्वर रुष्ट होते हैं, और हत्या करने वाले को भयंकर दन्ड देते हैं। देवताओं को खुश करने व अपना भला चाहने वाले जो देवताओं की पत्थर की मूर्ति के सामने पशु हत्या करते हैं उससे उनके संस्कार भी हिंसक बन जाते हैं। यही कारण है आज मानव जगत में चारों ओर हिंसा की प्रवति वेगवती हो रही है।

समीक्षा :-

वैदिक धर्म पूर्ण रुप से अहिंसक है क्योंकि वेदों में केवल जगह-जगह अहिंसा का उपदेश दिया गया है। अन्य धर्म मत जो अहिंसा का समर्थन करते हैं उनको साधूवाद है किन्तु न्याय, दया, सत्य और सत्य ईश्वर भक्ति के अभाव में बहमत पूर्ण धार्मिक नहीं कहा जा सकता है।

केवल वैदिक धर्म (आर्यसमाज) में ही उक्त पाचों गुणों का समावेश है इसलिए सर्व श्रेष्ठ वैदिक धर्म है।ज

२) न्याय :-

नीयते प्राप्यते विवक्षितार्थ सि ंरिनेन इति न्याय (न्यायदर्शन) अर्थात् जिसके द्वारा किसी प्रतिपाद्य विषय को सिद्धि की जा सके जिसकी सहायता से किसी निश्चित सिद्धान्त पर पहुंचा जा सके उसी का नाम न्याय है।

न्याय दर्शन को चार भागों में विभिक्त किया जा सकता है।

१) सामान्य ज्ञान की समस्या को हल करना २)

www.thearyasamaj.org

जगत की पहेली को सुलझाना ३) जीवात्मा तथा मुक्ति ४) परमात्मा और उसका ज्ञान।

ज्ञान दो प्रकार का होता है। एक अर्थ ज्ञान और दूसरा अर्नाष ज्ञान

आर्य ज्ञान की परिभाषा :- ईश्वरीय व्यवस्थानुसार, वेदानुसार, सृष्टिक्रमानुसार, विज्ञान के अनुसार और जैसी मेरी आत्मा, मन नहीं केवल आत्मा दूसरों से अपने लिये व्यवहार चाहती है वैसा ही दूसरों के साथ करना, और धर्म का सत्य स्वरुप, कर्म का सत्य स्वरुप, प्रत्येक आध्यात्म सत्य मान्यताऐं राजनीतिक सत्य मानताऐं सामाजिक सत्य मान्यताऐं आदि-आदि आर्ष ज्ञान कहलाता है।

अर्नाष ज्ञान की परिभाषा :- निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी ईश्वर को मनुष्यों की काल्पनिक, मूर्तियों में सृष्टिक्रम के विरुद्ध बातों को मानना - जड़ की पूजा का अन्ध विश्वास काल्पनिक विज्ञान व सृष्टिक्रम के विरुद्ध धार्मिक ग्रन्थों की रचना, काल्पनिक देवी देवताओं के आगे अपने स्वार्थ के लिये पशु हत्या करना। अनेक जादू टोना भूत प्रेत, कलित ज्योतिष शास्त्रों की रचना आदि अनार्ष ज्ञान है। न्याय और अन्याय का भेदन समझ कर अन्याय का समर्थन करना आदि।

समीक्षा :- वैदिक धर्म सत्य न्याय का पक्षधर है, सम्पूर्ण वेद शास्त्रों में कहीं पर भी अन्याय की शिक्षा नहीं दी गयी है। किन्तु अन्य धर्म सम्प्रदायों में न्याय को स्वार्थ की नजरों से किया गया है। इसलिये वह पूर्ण धर्म नहीं कहा जा सकता है। केवल वैदिक धर्म में उक्त पांचों गुणों का समावेश है इसलिए सर्वश्रेष्ठ वैदिक धर्म है।

२) **दया :-** महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश के सातवें सम्मुलास से

प्रश्न - परमेश्वर दयालु व न्यायकारी है व नहीं?

उत्तर - है।

प्रश्न - ये दोनों गुण परस्पर विरुद्ध हैं। जो न्याय करे तो दया और दया करे तो न्याय छूट जाए, क्योंकि न्याय उसको कहते हैं कर्ता के कर्मों के अनुसार न अधिक न न्यून, दुःख पहुंचाना और दया उसको कहते हैं जो अपराधों को बिना दण्ड दिये छोड़ देना।

उत्तर - न्याय और दया नाम मात्र का ही भेद है। दया वही है कि उस डाकू को कारागार में रखकर पाप करने से बचाना। डाकू पर दया और उस डाकू को मार सकने से अन्य सहस्त्रों मनुष्य पर दया प्रकाशित होती है।

समीक्षा :- वैदिक धर्म के अतिरिक्त वर्तमान में प्रचलित धार्मिक व सामाजिक व राजनैतिक संगठनों में निजी स्वार्थ की भावना चरण सीमा पर है। इसीलिए व्यवहारिक जगत में परोपकार श्रद्धा परहित के संस्कार दिनों दिन न्यून होते जा रहे हैं। अधिकांस समुदाय दया का मूल उद्देश्य न समझ कर अन्धविश्वास व रूढ़ी परम्पराओं की गति में ही वृद्धि कर रहें है। आज दया शब्द के सही मायनों को समझने की अति आवश्यकता है।

३) **सत्य :-** महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश की तृतीय सम्मुलास में कहा है कि जो जो गुण कर्म स्वभाव और वेदों के अनुकूल हो वह-वह "सत्य" और उससे विरुद्ध असत्य है। दूसरा जो जो सृष्टिक्रम के अनुकूल है वह सत्य और जो जो विरुद्ध है वह सब असत्य है। तीसरा - आप्त अर्थात जो धार्मिक, विद्वान सत्यवादी, निष्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है वह सत्य और जो जो विरुद्ध है व असत्य है। चौथी अपनी आत्म की पवित्रता विद्या के अनुकूल सुख अप्रिय, दुःख प्रिय है वैसे सर्वत्र समझा लेना। पांचवी आत्म आठप्रमाणों अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिहय अर्थाप्रति स्वभाव और अभाव है। यह सत्य की कसोटिया है।

समीक्षा :- उपर्युक्त सत्य की कसोटियों के आधार पर केवल वैदिक धर्म व आर्य समाज की सही उतरता है। बाकी अन्य धार्मिक संगठनों में किसी न किसी

www.thearyasamaj.org

रुप में मान्यताऐं असत्य पर आधारित होती है और उनका नेतृत्व पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर उन्हीं असत्य या रुढ़ी मान्यताओं को ही प्रचलित करते हैं जिससे मानव समाज में अति धार्मिक अन्धविश्वास फैलता जाता है।

५) ईश्वर मान्यता तथा भक्ति :

ईश्वर की परिभाषा :- ईश्वर सचिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपक, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टि कर्ता है। (आर्यसमाज का दूसरा नियम) स ही सर्ववित सर्वकर्ता - (सा. दर्शन) वह परमात्मा सर्वान्तयामी और सब जगत का कर्ता है।

नोट - वेदनों में उपनिषिदों में, दर्शनों में व अन्य आर्ष ग्रन्थों में बताया गया है। एक निरांकर ईश्वर है और उसी की भक्ति करनी चाहिए।

समीक्षा :- महाभारत काल के बाद सबसे विवादित ईश्वर का विषय रहा है। ईश्वर का सत्य ज्ञान न होने के कारण सम्पूर्ण विश्व में आपस में लड़ाई झगड़ा, मारकाट, सामाजिक शोषण, ईश्वर के नाम से साधारण मनुष्यों को भ्रमित करके अपनी-अपनी दुकानदारियां करना रहा है और आज ईश्वर के नाम से पाखण्ड चरम सीमा पर पहुंच गया है। कोई भी सत्य को समझने को तैयार नहीं है, अपितु अपने पूर्वाग्रहों से अपनी अपनी असत्य मरने मारने को तैयार है।

अतः धर्म के अतिरिक्त प्रचलित धर्म मतों से अहिंसा, न्याय, दया, सत्य और ईश्वर भक्ति के इन गुणों में से कोई न कोई कभी हानी होने के कारण पूर्ण धार्मिक संगठन नहीं माना जा सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्देशित सिद्धान्तों व आर्य समाज को एक नएक दिन संसार को मानना ही पड़ेगा।

वैदिक प्रचारक
गढ़निवास मोहकमपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड
मोबा. ९४११५१२०१९

परोपकार और परहित करते समय अपना मान-अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।

मैंने आर्य समाज का उद्यान लगाया है। इससे मेरी अवस्था एक माली की सी है। पौधों में खाद डालते समय, राख और मिट्टी माली के सिर पर पड़ ही जाया करती है। मुझ पर राख और धूल चाहे जितना पड़े, मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी-भरी बनी रहे और निर्विघ्न फूले फले।

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

चल तू!

(चल - चंचल)

भक्ति भरा सज्जन का पथ वर,
भव से मुक्ति मिले जिस अथ पर।
जननिन्दित तज पग शुभ पथ धर॥
जनपूजित पथ पर दृढ़ गति
स न वि द्य कर।
बन अविचल तू॥
पाप वासना को जननी पाप बुद्धि से
नित ही डरकर दूर विचर मन।
नीति यही वर।
सार विचार हृदय में हितकर
भर अविरत तू। हे मन चल तू।
वेद वरेण्य विचार वरा कर
मननामृत को अधर धरा कर,
आत्मसाक्ष्य से वचन मिलाकर,
बोल तोल कर सत्य तुला पर,
मत कर छल तू। हे मन चल तू।
मधु गुण संचय शील भ्रमर बन,
स्नेह ज्योति का स्नेह अमर बन,
पर दुःख का अन वद्य विदुर बन,
मत बन खल तू। हे मन चल तू।

www.thearyasamaj.org

सच्चे शिव की प्राप्ति

❑ विद्यासागर शास्त्री गणगणे
सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४०, अमरावती

पण्डित अम्बाशंकर - सामवेदी उदीच्य वंशीय ब्रह्मण बुढ़ापे के चिह्न स्पष्ट दिखाई देते है।

आयु ५०-५५ के लगभग किन्तु तेजस्वी राजसंमान से विभूषित, ग्राम के स्थानीय शासक तहसीलदार, धनलक्ष्मी की कृपा के पात्र, शील संपत्ति के भण्डार यथा समय कोमल और उग्र धर्म निष्ठ, देशकाल के ज्ञानी कुलाचार के पालक।

रुक्मिणी - आतिथ्य सत्कार प्रवीणा, गृहस्थ धर्म-निष्णाता, दयार्द्र/चत्ता, पातिव्रत धर्मानुकूला, मानसा वाचा कर्मणा पति को सन्तुष्ट रखने वाली (पण्डित अम्बाशंकर की पत्नी)

मूल शंकरव - पण्डित अम्बाशंकर का पुत्र मेधावी, स्वभाव से सरल, अद्‌भुत कुशाग्र बुद्धि-ब्रह्मवर्चस्वी आयु लगभग १३ वर्ष। सिपाही तथा अन्य पुजारी गण।

प्रथम दृश्य :-

टंकारा ग्राम में पण्डित अम्बाशंकर का घर। नवीन नवार से बुना हुआ पलंग जिस पर पण्डित अम्बाशकर विराजमान होकर शिव पुराण का स्वाध्याय कररहे है। प्रसन्न मुद्रा में शिव माहात्म्य को ध्यानपूर्वक पढ़ रहे हैं। बीच बीच में पत्नी रुक्मिणी देवी अपने काम में व्यस्त है।

अम्बाशंकर - देवी! आज महाशिवरात्री के पावन पर्व का परम पवित्र दिन है।

हमारी कुल परम्परा के अनुसार आज के दिन कैलासवासी भगवान शंकर साक्षात दर्शन देंगे। आज का दिन बड़ा ही सौभाग्य का है। आज सायंकाल को हम शिव मन्दिर में जाकर रात्रि में जागरण करेंगे। मूलशंकर की ओर देखकर - पुत्र मूल तुम एक बात का विशेष ध्यान रखना - आज तुमने शिवरात्री का व्रत रखकर उपवास रखना है। व्रत को अच्छी प्रसार से निभाना, कहीं कोई वस्तु खा न लेना। भगवान भोलेनाथ बहुत दयालु है। उनपर भरोसा रख वे अवश्य ही कृपा करेंगे।

रुक्मिणी - मन में यह सोचकर कोमल काया मेरे पुत्र को व्रत का पालन करना अत्यन्त क्लेशदायक होगा।

आर्य - मैं आपके विचारों का अनुमोदन करती हूं। जो आप अपने पुत्र को अपने सदृश धर्मनिष्ठा शिव भक्त बनाना चाहते है।

अम्बाशंकर - हाँ देवी! मैं यही चाहता हूं कि मूल मेरे जैसा ही शिव भक्त बनें।

रुक्मिणी - द्विजवंशी में दीपक रूप पुत्र को कुल मर्यादा धर्म नीति सुयोग्य संस्कार आदियों से अवश्य भूषित करना चाहिए क्योंकि कुल की प्रतिष्ठा पुत्र पर ही अवलम्बित होती है।

अम्बाशंकर - देवी! तुम ठीक कहती हो और मूल भी इस योग्य हो गया है।

रुक्मिणी - किन्तु स्मृति ग्रन्थ बचपन में कठिन व्रतों की आज्ञा नही देते, फिर आप जैसे शास्त्र मर्मज्ञों को क्याकहूं।

अम्बाशंकर - देवी! तुम्हारा यह कथन शास्त्रज्ञा से विरुद्ध है।

रुक्मिणी - वह कैसे?

अम्बाशंकर - ब्राह्मण यदि अपने पुत्रों को वर्चस्वी विद्वान एवं गुणवान बनाना चाहते है तो पांचवे वर्ष में ही यज्ञोपवीत संस्कार कर देना चाहिए और तभी से व्रत करवाने आरंभ करें। ऐसा स्मृतियों विधान है।

www.thearyasamaj.org

रुक्मिणी - अभी यह बालक है। जब बड़ा हो जायेगा तब स्वयमेव व्रत रखा करेगा, तुझे तो भय लगता है कहीं मेरे पुत्र को तकलीफ न हो जाएं।

अम्बाशंकर - नहीं नहीं, इसे आज उपवास अवश्य ही करना होगा परन्तु कुल मर्यादा का पालन करना होगा।

रुक्मिणी - मैं आपके विचारों के विपरीत कैसे चल सकती हूँ।

अम्बाशंकर - किन्तु देवी! संसार में ऐसे ही कार्यों को करना चाहिए जो पहले भले ही विष तुल्य लगते हो किन्तु बाद में अमृत तुल्य प्रतीत ही (इस प्रकार पत्नी को प्रसन्न करने उसकी सम्मति से मूल शंर को व्रतों के फल तथा सुख बताए जिससे उसे व्रतों पर रुचि हो गई)।

अम्बाशंकर - मूल शंकर की तरफ देखकर, देखो पुत्र! तुमने आज अवश्य ही उपवास रखना है।

मूलशंकर - बहुत अच्छा पिताजी! आपकी आज्ञा का अवश्य ही पालना करूंगा।

अम्बाशंकर - बहुत अच्छा पुत्र! तुम से मुझे यह? उम्मीद थी।

द्वितीय दृश्य :

(शिवालय का विशाल आंगन, मन्दिर ध्वजाओं से सजा हुआ हैं। भगवान शिव की सुन्दर मूर्ति मन्दिर के मध्य सुशोभित है। मूलशंकर और अम्बाशंकर अन्य भक्तों के साथ प्रवेश कर रहे है।

मूलशंकर ने पीताम्बर धारण किया हुआ है। गले में सुन्दर रुद्राक्ष माला डाल रखी है। ललाट पर चन्दन कातिलक कर रखा है। दाएं हाथ में शुद्ध जल से भरा हुआ लोटा है। बाएं हाथ में पूजा की सामग्री का थाल है। कोई भक्त घण्टा बजाता है तो कोई हर महादेव! बम बम हादेव! भोलेनाथ कहते है। घण्टे का नाद और तेजी से ध्वनि होता है। मन्दिर में घण्टे की आवाज गूंजती है। दो पुजारी शिवजी की मूर्ति के आगे आरती का थाल लेकर जिसमें फूल-दीपक लिए हुए आरती उतारने में मग्न है।

मूलशंकर - पिताजी! यहाँ तो भक्त लोगबहुत आए हुए है और यहाँ का दृश्य बहुत ही मनोहर है।

अम्बाशंकर - हाँ पुत्र, देखो भक्त कैसे भक्ति भाव से शिव स्त्रोत्र गा रहे है। कुछ आरती गा रहे है।

आरती का स्तर तेज हो जाता है, सब मिलकर मस्ती में आरती ही गाने लगते है - तुम हो नाथ अगम अगोचार,

जय जय शिवशंकर।
महा उग्र है रूप तुम्हारा,
शरणागत को तुमने तारा॥
तुम हो अतिशय रुद्र भयंकर,
जय जय शिव शंकर।
शंकर भोलेनाथ कहाते,
जोवर मांगे नहीं झकुचाते॥
तुम हो शिरीश विश्वंभर,
जय जय शिवशंकर।
नीलकण्ठ हो शक्तिमन्त हो,
नित्य पापी के देव अन्त हो॥
महेश हे! तुम हो प्रलयंकर,
जय जय शिवशंकर।

(आरती का स्वर मन्द हो जाता है)

मूलशंकर - शिवजी की महिमा से आकृष्ट हृदय हुआ हुआ)

पिताजी! यहाँ तो बहुत ही आनन्दमय वातावरण है।

अम्बाशंकर - हाँ पुत्र! येसन शिवजी की ही कृपा है। जो कोई यहाँ आता है वह हंसता हुआ ही जाता है।

मूलशंकर - फिर तो भगवान बड़े ही कृपालु है पिताजी!

अम्बाशंकर - हाँ पुत्रा ये सब शिवजी की ही कृपा है।

मूलशंकर - पूजारियों की ओर संकेत करता हुआ

www.thearyasamaj.org

- पिताजी!

क्या ये लोग यहीं रहेंगे?

अम्बाशंकर - हाँ पुत्र! आज की रात यही रहेंगे। राम भक्त रात में शिवजी की चार बार पूजा करेंगे।

मूलशंकर - क्या इस रात शिवजी की बार पूजा की जाती है?

अम्बाशंकर - हाँ पुत्र! इस रात बार पूजा की जायेगी, क्योंकि यह शिवरात्रि महाशिवरात्रि है।

मूलशंकर - तो फिर रातभर ऐसा ही आनन्द बना रहेगा?

अम्बाशंकर - हाँ पुत्र! शिवजी की कृपा से ऐसा ही होगा (पहले प्रहर की पूजा आरम्ब होती देखकर)

देखो पुत्र! सावधान हो जाओ। अब पहले प्रहर की पूजा आरम्भ होती है।

ध्यानपूर्वक भक्तिभाव से पूजा करना।

मूलशंकर - जी, पिताजी ऐसा ही करूंगा।

तृतीय दृश्य :-

(आधी रात का समय अम्बाशंकर तथा अन्य सब पुजारी निद्रा देवी की गोद में सुखपूर्वक पड़े हुए है परन्तु मूलशंकर अपना व्रत भंग न हो इस डर से आंखों में जल के छीटों से निद्रा के प्रबल वेग को रोककर मूर्ति पर ध्यान लगाता हुआ जागता रहता है।

मन्दिर में दो ज्योतियां जल रही है। एक मूलशंकर की आत्मा में, दूसरी मन्दिर में पर्याप्त प्रकश हो रहा है। मन्दिर की चारों दीवारें शान्त है।

मूलशंकर - (स्वगत) आहा! कितना सुन्दर समय है। मन्दिर में कितनी शान्ति हैं।

शिवजी के दर्शन का अच्छा समय है। अभी त्रिशूलधारी, पिनाक धनुष्यधारी पाशुमत अस्त्रधारी भगवान शिवजी के साक्षात् दर्शन होंगे। (सोए हुए पुजारियों को देखचकित होकर) यह क्या? सबके सब पुजारी क्यों सोग गये? ओह! पिताजी भी सो रहे हैं। अब तो बाहर के पुजारी भी ऊंघ रहे है, परन्तु मैंने तो व्रत लिया है इसलिए आज तो जागना ही है। पिताजी ने तो कहा था कि आज जो सो जायेगा उसे शिवजी के दर्शन नहीं होंगे और पाप लगेगा और यह भी कहा था इस रात शिवजी की चार बार पूज की जायेगी। पुजारी तो सो गये है अब पुजा कौन करेगा? इस लिए मैं ही पूजा करता हूँ जिससे मैं अकेला ही पुण्य का भागी बनूंगा और अवश्य ही आज भगवान शिवजी के दर्शन करूंगा। पूजा की थाली से कुछ पुण्य लेकर मूर्ति पर श्रद्धापूर्वक चढ़ाता है। स्वास्तिक आसन लगाकर ध्यानस्थ होता हुआ शिवजी को प्रार्थना करता है -

अयि दयालु महेश कृपालु हे।
कर कृपा भव दुःख समुंद्र से,
सपदि पर करो मुझ बाल को,
शरण आगत हू शुचि भाव से ए शुचि भाव से
विपुल रोग करें नित जो प्रभो।
विषय भोग नहीं चाहता।
मरण-जन्म दुःखादि हरे उसे,
तव विमुक्ति प्रभु। चाहता॥
मम विभो। जननी जनिता सखा,
सकल जीव के भुवि वित्त हो।
हृदय शोक विभंजन ईश हे।
अभय संस्कृति से मम चित्त हो॥
सतत व्याकुल हूँ तव दर्शने,
शुचि निरंजन मंगल मूल हे।
शरण जगत है इस बाल को
सपदि दर्शन दो मम ईश हे।

मूलशंकर प्रार्थना से तल्लीन हो जाता है तब मूलशंकर हृदय से निम्न प्रार्थना करता है।

अयि दयालु महेश। दयालवम्
कुरू दयार्वव। दुःख महाम्बुधेः
सपदि तारय मालक बालकम्
शरणमैमि शरण्य! शिवशंकर!

चतुर्थ दृश्य :-

www.thearyasamaj.org

रात्रि का तीसरा प्रहर, दीपक के प्रकाश से मन्दिर आलोकित है। शिवजी की प्रतिमा पर धतूरा आदि के फूल पड़े है। नैवेद्य तथा भोज्य पदार्थ, मिठाई, आदि चढ़ावा भी पड़ा हुआ है जो भले भक्तों ने श्रद्धापूर्वक चढ़ाया था। इतने में ही दोन तीन चूहे बिल से निकलकर मूर्ति पर चढ़े हुए चढ़ावे को खाने लगते हैंः

मूलशंकर - चकित होकर है? यह क्या? ये छोटे से शूद्र जन्तू? और त्रिशूलधारी भगवान शिव की मूर्ति पर भगवान का घोर अपमान? इन्होंने तो चढ़ावा भी दूषित कर दिया है। अपने शूद्र पैरों से भगवान की मूर्ति को खराब कर दिया है। ओह! कितना घोर अपमान? परन्तु यह शिवजी की मूर्ति तो हिलती तक नहीं। संभ हो ये सच्चे शिव हो। पिताजी हो! तुझे बताया करते थे कि शिवजी बहुत शक्तिशाली है। उनके पास पिनाक नाम का धनुष्य है और पाशपत अस्त्र है। जिसके एक बार चलने से संसार में प्रलय हो जाती है। त्रिपुरासुर के तीन नगरो को अपने प्रचण्ड-अग्नि के तीसरे नेत्र से भस्म कर दिया था। जिनकी पवित्र मूर्ति कभी शान्त, कभी उग्र हो जाती है। भगवान शिवजी इतने महान पराक्रमी है, फिर भी इन शूद्र चूहों से तिरस्कार कैसे सहन करते है? कहाँ गगा वह पराक्रम जो इन चूहों से भी अपनी रक्षा नहीं कर पा रहे? ज्ञात होता है कि यह सच्चा शिव नहीं है और न ही इसमें शक्ति? (इसका अपने में समाधान न मिलने पर मूलशंकर अपने पिता को जगाता है। पिताजी! पिताजी! शीघ्र जगिए! शिवजी यदि बहुत पराक्रमी है तब भी इन चूहों को भगाने में असमर्थ है। अम्बाशंकर जागकर मूलशंकर को पूछते है - पुत्र! क्या बात है? क्यों घबरा रहा है? क्या तुम्हें नींद सता रही है? क्या तुमने कुछ देखा जिससे तू चकित मालूम हो रहा है?

मूलशंकर - पिताजी! जब अप और ये पुजारी सब सो गये तब मन्दिर की चारों दिवारे शान्त थी परन्तु इस समय चूहे भगवान शिवजी के ऊपर चढ़कर उन चढ़े हुए चढ़ावे को खा रहे थे और खाकर विष्टा कर गयेंः

अम्बाशंकर - पुत्र यह सब मैं क्या सुन रहा हूँ।

मूलशंकर - पिताजी आप कहा करते थे कि शिवजी बहुत पराक्रमी है, अब उनका पराक्रम कहाँ गया? जो चूहों को भी भगा नहीं सकते?

अम्बाशंकर - पुत्र! यह तो शिवजी की केवल मूर्ति है। वे तो हमेशा कैलाश पर्वता पर विराजमान रहते है। प्रसन्न होने पर भक्तों पर कृपा करते है। कलियुग में भगवान साक्षात दर्शन नहीं देते, इसलिए मूर्ति की ही पूजा की जाती है। मूर्ति की पूजा करने से शिवजी प्रसन्न होते है। भवना ही करनी चाहिए। तर्क वितर्क नहीं।

मूलशंकर - भावना से कर्तव्य ऊँचा होता है पिताजी! मेरी कर्तव्य में निष्ठा है। (पिताजी को मौन देखकर) जब तक मैं अपनी आँखों से सच्चे शिवजी के दर्शन न कर लूं तब तक मैं किसी मूर्ति की पूजा नहीं करूंगा।

अम्बाशंकर - नहीं पुत्र ऐसा न करना।

मूलशंकर - अब मेरा इन मूर्तियों से विश्वास उठ गया है। पिताजी मुझे अब सच्चे शिव की पूजा से ही सन्तोष होगा।

अम्बाशंकर - बस पुत्र अधिक न बोलो (सिपाही को संकेत से बुलाकर) जाओ इसे घर छोड़ आओ। मूलशंकर घर जकर व्रत तोड़कर भोजन कर लेता है।

प्रदेश की खबेर

आर्य समाज पिपरा (टिमकगढ) :- आर्य समाज पिपरा में पं. सत्यवीरजी शास्त्री के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सोल्लास के साथ बड़ी धूम-धाम से संपन्न हुआ। प्रतिदिन सायंकाल भजनोपदेशक शिवनारायणजी आर्य के भजन एवं आचार्य ओमदेवजी के जोशीले गीत एवं प्रवचन संपन्न हुए। समाप्ति पर ग्राम भोजन करवाया गया। इसे संपन्न करवाने श्री यशपालजी, श्री पूरणजी, मोइनजी, डॉ. ठाकरेजी महान प्रयास किया।

www.thearyasamaj.org

जिनके इशारों पर लोग सड़कों पर आते हैं, शहर बंद हो जाते हैं, उनकी सुरक्षा तुरंत बंद करो, सुरक्षा पर किये जा रहे ५०० करोड़ रुपये सेना फंड में जमा करो

आर्य समाज हंसापुरी की मांग

अलगाववादी युवाओं से पत्थर फिंकवाते हैं, अपने बच्चों को विदेशों में पढ़ाते हैं

जम्मू :- जिन कश्मीरी अलगाववादी नेताओं के एक इशारे पर लोग सड़कों पर उतर आते हैं, शहर बंद कर देते हैं, पत्थर बरसाते हैं, उनके बच्चे और नाते-रिश्तेदार कश्मीर में नहीं रहते। विदेशों में रहते हैं तमाम सुख-सुविधाओं के साथ।

कुछ के परिवार और बच्चे मलेशिया, कनाडा, ब्रिटेन और अमेरिका में हैं। कइयों के बच्चे दिल्ली, मुंबई और बेंगलुरू में रहकर या तो पढ़ाई कर रहे हैं या फिर ऊंची नौकरी। अलगाववादी नेताओं की नीयत पर ऐसा ही सवाल उठाया है जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के संस्थापकों में से एक हाशिम कुरैशी के बेटे जुनैद कुरैशी ने। उन्होंने पूछा है कि अलगाववादी दूसरों के बच्चों को बंदूक उठाकर मरने के लिए क्यों उकसाते हैं? जुनैद उस उाशिम कुरैशी का बेटा है, जो ३० जनवरी १९७१ को इंडियन एसर लाइंस का विमान हाईजैक कर लाहौर ले गया था। वहां यात्रियों को छोड़ दिया गया था पर विमान में आग लगा दी गई थी।

हालांकि बाद में हाशिम कुरैशी ने आतंक की राह छोड़ दी। जुनैद ने कहा कि कश्मीरी नौजवान अलगाववादियों से ये सवाल पूछें कि अगर बंदूक उठाना जरूरी है तो फिर वे क्यों अपने बच्चों को बंदूक नहीं थमाते।

दरअसल जैसे ही अलगाववादी नेताओं के बच्चे थोड़े बड़े हो जाते हैं उन्हें कश्मीर से बाहर भेज दिया जाता है। ऐसा काश्मीर के लगभग हर अलगाववादी नेता ने किया है।! फिर चाहे वह तहरीक-ए-हुर्रियत के नेता सैय्यद अली शाह गिलानी हो, हिजबुल सरगना सैय्यद सलाउद्दीन हो या फिर दुखतरान-ए-मिल्लत की आसिया अंद्राबी हो। इनके बच्चे कभी किसी प्रदर्शन में शामिल नहीं हुए है। बात चाहे वर्ष २००८ के दंगों की हो या फिर २०१० की हो या फिर अभी कुछ दिनों से जो कश्मीर में चल रहा है उसकी हो।

कई बार तो ऐसा भी देखने में आया है कि इन नेताओं के बच्चे उस दौरान कश्मीर में आए और उन्हें तुरंत वापस भेज दिया गया। कभी किसी नेता ने कश्मीर के खराब हालात के दौरान अपने बच्चों को नहीं बुलाया। हर बार दंगों में इन नेताओं के बच्चे बाहर ही रहे हैं।

दोहरे मापदंड : आराम की जिंदगी गुजार रहे हैं अलगाववादी नेताओं के परिवार

सायीन मलिक - जेकेएलएफ :

अन्य महिलाओं के लिए इस्लामिक ड्रेस कोड, पर पत्नी के लिए नहीं :-

२०१५ में मलिक और पत्नी मुहहाला का फोटो स्पेशल मीडिया पर वायरल हुआ। दोनों ट्रेंडी आउटफिट में थे। जबकि मलिक कश्मीरी मुस्लिम महिलाओं के लिए इस्लामिक ड्रेस कोड का समर्थन करते हैं।

पाकिस्तानी लड़की मुशहाला हुसैन ने २००९ में मलिक ने शादी की थी। वह न्यूड पेंटिंग्स की चित्रकार है। लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से ग्रेजुएट है। मुशहाला के पिता एम हुसैन पाकिस्तान में इको नॉमिस्ट हैं। मां पाक मुस्लिम लीग की महिला विंग की प्रधान हैं। मलिक २०१२ में पिता बने।

www.thearyasamaj.org

आसिया अंद्राबी-दुख्तरान-ए-मिल्लत :

जब आंतक मरा, तब मलेशिया में घूम रहा था बेटा

अगस्त २०१५ में आसिया मुठभेड़ में मारेगए आतंकी को श्रद्धांजलि दे रही थी तब उसका बेटा कासिम मलेशिया में दोस्तों के साथ घूम रहा था। फेसबुक स्टेटस था चिलिंग अराउंड विथ फ्रेंड्स।

आसिया का बड़ा बेटा मोहम्मद बिन कासिम मलेशिया में मौसी के साथ रहता है। वह बैचरल ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नोलाजी का कोर्स कर रहा है। छोटा श्रीनगर में पढ़ाई कर रहा है। एक भतीजा पाक सेना में कैप्टन, दूसरा इस्लामाबाद यूनिवर्सिटी में नौकरी करता है।

सैय्यद अली शाह गिलानी - हुर्रियत

पोते ने कहा, हमारा कॅरिअर बर्बाद हो रहा है तो हड़ताल पास ले ली :-

२०१० में लंबे समय तक कश्मीर बंद करवाया। कश्मीरी युवाओं से उपद्रव करवाते रहे। लेकिन जब इनके पोते ने कहा था कि इससे हमारा कॅरिअर अटक गया है तो तुरंत हडताल वापस ले ली थी।

गिलानी का बड़ा बेटा नईम तथा बहू बजिया पाकिस्तान के रावलपिंडी में डॉक्टर हैं। छोटा बेटा जहूर परिवार के साथ दिल्ली में रहता है। पोता इजहार दिल्ली में एक प्राइवेट एयरलाइंस कंपनी में काम करता है। बेटी फरहत जेद्दाह में रहती है। टीचर है। भाई गुलाम नवी लंदन में रहता है।

सलाउद्दीन - हिजबुल का सरगना :

खुद पाक में, बच्चे कश्मीर में सरकारी नौकरियों में :-

सैय्यद सलाउद्दीन का परिवार घाटी में आराम की जिंदगी गुजार रहा है। उसके पांच में से तीन बेटे राज्य सरकार की अच्छी नौकरियां कर रहे हैं। सलाउद्दीन खुद पाकिस्तान में आराम से अपने घर रहता है।

सलाउद्दीन पाकिस्तान में रहता है। बड़ा बेटा शकील श्रीनगर के अस्पताल में सहायक है। दूसरा जावेद शिक्षा विभाग में, शाहिद कृषि विभाग में है। वाहिद शेर-ए-कश्मीर इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में डॉक्टर है। सबसे छोटा माजिद एमटेक का छात्र है।

अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर बना रहे हैं अलगाववादी नेता :-

मीरवाइज उमर फारूख, हुर्रियत नेता :-

अमेरिकी मूल की मुस्लिम शीबा मसदी से शादी की है। एक बेटी है, जो मां के साथ अमेरिका में ही रहती है। उसकी बहन राबिया फारूक अमेरिका में डॉक्टर है।

मोहम्मद अशरफ सहराई, हुर्रियत नेता :- कभी गिलानी का उत्तराधिकारी माना जा रहा मोहम्मद अशरफ सहराई का बेटा आबिद दुबई में कंप्यूटर इंजीनियर्स है।

गुलाम मोहम्मद सुमजी, हुर्रियत नेता :- का बेटा जुगनू दिल्ली में पढ़ाई कर रहा है। वह छोटी आयु में ही दिल्ली भेज दिया गया। रिश्तेदारों के पास रहकर पढ़ाई कर रहा है।

फरीदा, दुख्तरान-ए-मिल्लत :- महिला अलगाववादी नेता फरीदा का बेटा रूमा मकबूल साउथ अफ्रीका में डॉक्टर है। २०१४ में के चुनाव में फरीदा को गिरफ्तार कर लिया गया था।

मसरत आलम, हुर्रियत नेता :- उसके दो बेटे हैं। दोनों की आयु कम है। वह श्रीनगर के ही एक स्कूल में पढ़ाई करते हैं। मसरत २००८-१० में प्रदर्शनों का मास्टरमाइंड रहा है।

एयाज अकबर, हुर्रियत नेता :- सैय्यद अली शाह गिलानी गुट के प्रवक्ता एयाज अकबर का बेटा सरवर याकूब पूणे में रहकर मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहा है।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज सान्ताक्रूज वर्ष २०१७ के लिए निम्नलिखित पुरस्कारों हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जाती है

१) **वेद-वेदांग पुरस्कार :** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद-वेदांगों पर अनुसंधान किया हो एवम् ग्रन्थ लिखे हो उन्हें "वेद-वेदांग पुरस्कार" से सम्मानित किया जायेगा।

२) **वेदोपदेशक पुरस्कार :** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में सेव की हो उन्हें "वेदोपदेशक पुरस्कार' से सम्मानित किया जायेगा।

३) **श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार :** जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्य समाज की अधिकतम सेवा की हो। जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्य समाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्य महापुरुषों के जीवन आदि से हैं। उन्हें "श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार" से सम्मानित किया जाएगा।

४) **श्रीमती लीलावती महाशय "आर्य महिला पुरस्कार" :** जिस विदुषी से जीवन पर्यन्त आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया हो ऐसी महिला विदुषी/कार्यकर्ती को पुरस्कार किया जायेगा।

५) **पं. युधिष्ठिर मीमांसक स्मृति पुरस्कार :** ऐसे विद्वान को सम्मानित किया जायेगा जो आर्य पाठ विधि से विद्याध्ययन करके स्नातक होकर कम से कम विगत १० वर्षो से किसी निजी या सरकारी शिक्षण संस्थाओं में सर्विस न करके आर्य पाठ विधि के अध्ययन-अध्यापन के लिये गुरूकुल में या स्वतन्त्र रूप से संलग्न हैं, वह इस पुरस्कार के पात्र होंगे।

६) **श्रीमती कृष्णा गान्धी आर्य युवक पुरस्कार :** इस पुरस्कार से किसी ऐसे नवयुवक कार्यकर्ता को जिसने ऋषि दयानन्द के विचारों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए रचनात्मक कार्य किया हो उन्हें सम्मानित किया जायेगा। नवयुवक की आयु ३० से ४५ वर्ष से मध्य होनी चाहिये।

७) **श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार :** यह पुरस्कार ऐसे वयोवृद्ध विद्वान जिसने जीवन पर्यन्त वैदिक सिद्धान्तों एवं आर्य समाज के लिये अपना जीवन समर्पित किया है उन्हें दिया जायेगा। इस पुरस्कार से वयोवृद्ध विद्वान/सन्यासी को सम्मानित किया जायेगा।

८) **श्रीमती प्रेमलता सहगल युवा महिला पुरस्कार :** यह पुरस्कार ऐसी एक युवा महिला कार्यकर्ता को दिया जायेगा जिसने ऋषि दयानन्द के विचारों व कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिये रचनात्मक कार्य किया हो। इस पुरस्कार से आर्यु विचारधारा को बढ़ाने व वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार हेतु कार्यरत युवती सम्मानित किया जायेगा।

९) **श्रीमती भागीदेवी छाबरिया गुरुकुल सहायता पुरस्कार :** ऐसा गुरुकुल जिसमें आर्य पाठ विधि से छात्र-छात्राओं को शिक्षा दी जाती हो। जिस गुरुकुल में कम से कम २५ छात्र-छात्राएं आवासीय शिक्षा ग्रहण करती हो। गुरुकुल को आर्य समाज से अनुदान की आवश्यकता हो। जिस गुरुकुल में भवन निर्माण का कार्य चल रहा हो। गुरकुल में साहित्य वृद्धि अथवा अन्न, वस्त्रादि के सहायता निमित्त।

१०) **श्री झाऊलाल शर्मा गुरुकुल पुरस्कार :** गुरुकुल में आर्य पाठ विधि से छात्र-छात्राओं को शिक्षा दी जाती हो। जिस गुरुकुल में कम से कम २५ छात्र-छात्राएं आवासीय शिक्षा ग्रहण करती हो। गुरुकुल में भवन निर्माणका कार्य चल रहा हो। गुरुकुल में साहित्य

www.thearyasamaj.org

वृद्धि अथवा अन्न, वस्त्रादि के सहायता निमित्त।

११) श्रीमती शिवराजवती आर्या "बाल पुरस्कार" : बाल पुरस्कार की राशि :- आर्य विधि से शिक्षा प्राप्त कर रहे भारत वर्ष में सर्वप्रथम आये किन्ही दो (योग्यत्तम) छात्र-छात्राओं पुरस्कार राशि दी जायेगी।

१२) श्री हरभगवानदास गांधी "मेधावी छात्र पुरस्कार" : यह पुरस्कार ऐसे छात्र दिया जायेगा जो वेद विषय पर पी.एच.डी. कर रहा हो या महर्षि दयानन्द सरस्वती से संबंधित विश्वविद्यालय में संस्कृत में प्रथम आया हो उसे पुरस्कृत किया जायेगा।

१३) स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कार : जिस युवा विद्वान ने जीवन पर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्य समाज की सेवा करने का संकल्प लिया है। उन्हें "स्व. आचार्य भद्रसेन युवा वैदिक विद्वान पुरस्कार" से सम्मानित किया जायेगा।

आत्म-विनय

❑ विद्यासागर शास्त्री

सुराज कॉलनी, प्लॉट नं. ४०, अमरावती

हे ईश! निर्मल मन कर दो।
१) हृदय-म्लानता कर प्रक्षालित,
उज्ज्वलता भर दो।
दूर हटा दो कलुष वृत्तियां,
२) शुद्ध हृदय भरं निगम सूक्तियां,
वाणी संस्कृत मधुर मन्त्र को,
मानस में भर दो।
३) निगम-शास्त्र का करू अनुशीलन,
मनन-श्रवण से ज्ञान-उपार्जन।
शक्ति पुंज दे शमित चित्त को,
ज्योतिर्मय कर दो।
४) तोड़ गिराऊँ भव के बन्धन,
आत्म ज्योति से पाऊँ स्पन्दन।
देव! मन्त्र छन्द्र का
मधुर-कण्ठ स्वर दो॥

सभा कार्यालय मंगलवारी सदर नागपुर में विक्रयार्थ पुस्तके

विक्रतार्थ पुस्तके	मूल्य
१) सुखी गृहस्थ	१५/-
२) पुत्र-पुत्रीकामेष्टि यज्ञ	३०/-
३) सत्संग गुटका (मराठी)	२०/-
४) आर्य सत्संग गुटका (हिन्दी)	१०/-
५) स्वाध्याय दर्पण	२५/-
६) पं. त्रिलोकचंद शास्त्री अमर जीवन	८०/-
७) जन आन्दोलन की पृष्ठभूमि	३०/-
८) हुतात्मा रामप्रसाद बिस्मिल	१५०/-
९) "महर्षि दयानन्द"	६१/-
१०) महर्षि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन	१५०
११) वैदिक सन्ध्या	२/-
१२) ऋषि दयादन्त गीतांजलि	१०/-
१३) आर्य समाज के दस नियम (संक्षिप्त) व्याख्या	३०/-
१४) सत्यार्थ प्रकाश (हिन्दी)	८०/-
१५) स्वमन्त व्यातन्तव्य प्रकाश	२/-
१६) वैदिक सन्ध्या हवन पद्धति	३/-
१७) सामवेद संहिता	३/-
१८) धर्मवीर पं. लेखराम	३५/-
१९) धार्मिक सामाजिक प्रबोधन	२०/-
२०) पर्जन्यवृष्टि यज्ञ	७५/-
२१) जीवन गीत	१०/-
२२) सत्यार्थ प्रकाश	१००/-
२३) गंगा ज्ञान सागर	२५०/-
२४) निर्णय के तट पर (पांचो भाग)	१३००/-
२५) पुत्र-पुत्री कामेष्टि यज्ञ	१००/-

❑ पं. सत्यवीर शास्त्री

www.thearyasamaj.org

अश्वरोही बनो

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्रोक्षो अजरो भूरिरेतः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनाति विश्वा।

ऋषिः-भुगु ।। देवता-कालः ।। छन्दः-त्रिष्टुप्।।

विनय - कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं। (सब सब्तों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियाँ (रश्मियाँ) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की भाँति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति-केन्द्र) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन-चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है।

इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है। हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षों की आयुवाले बहुत-से सौ-मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व-ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव को मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं।

भाईयों! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होनेवाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दिख रहा है? याद रक्खो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले सकते हैं जो ज्ञानी हैं - जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जे क्रान्तदर्शी हैं, जो विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान-प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले है, वे तो काल-रथ पर नहीं चढ़ सकते और न बढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर-उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग-भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो यह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुँच सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल-पल, क्षण-क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची-विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ - **सप्तरश्मिः** = सात रस्सियोंवाला।

सहस्त्राक्षः = हजारों धुरों को चलाने वाला **अजरः** = कभी भी जीर्ण, बुढ्डा न होने वाला **भूरिरेताः**= महाबली **कालः अश्वः**= समयरूपी घोड़ा **वहति**=चल रहा है - संसार-रथ को खींच रहा है। **विश्वा भुवनानि**= सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन **तस्य**=उसके **चक्राः**= चक्र हैं - उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। **तम्**= उस घोड़े पर **विपश्चितः** = ज्ञानी और **कवयः**= क्रान्तदर्शी लोग ही **आरोहन्ति**=सवार होते हैं।

साभार - 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

www.thearyasamaj.org

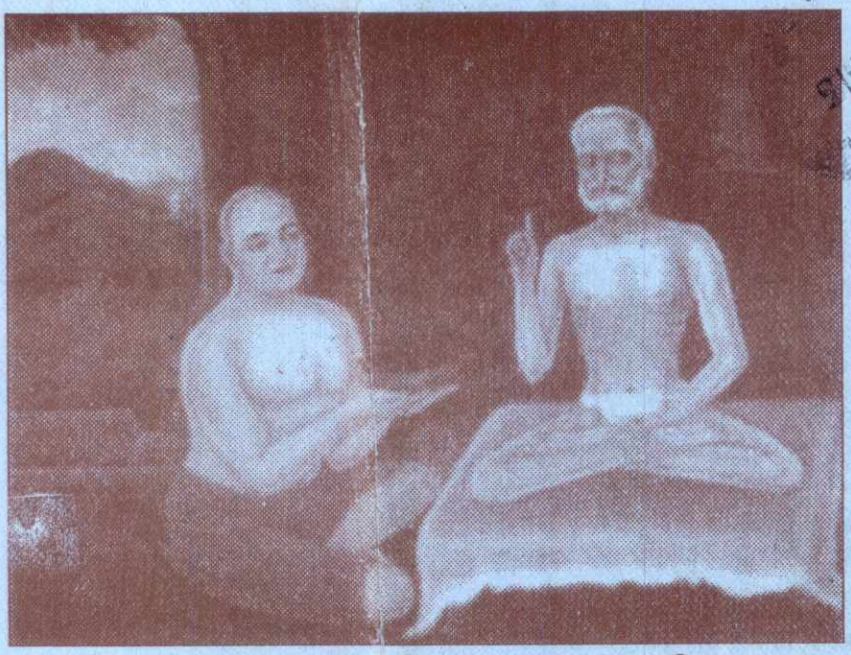

प्रज्ञाचक्षु गुरुवर विरजानन्द सरस्वती
एवं उनके अद्भुत शिष्य
महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

आर्य सेवक, नागपुर

प्रकाशक : अशोक यादव, प्रबंधक संपादक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा
मध्यप्रदेश एवं विदर्भ, नागपुर फोन : ०७१२-२५९५५६ द्वारा उक्त सभा के लिये प्रकाशित एवं प्रसारित
मुद्रक : फोन :